P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue-II* October-2015

वैश्वीकरण और असुरक्षा–राजनैतिक, आर्थिक व भौतिक चुनौतियाँ

मालती वर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर,
बी.एड. विभाग,
ए0एन0डी0एन0एन0एम0एम0,
हर्ष नगर, कानपुर

सारांश

वैश्वीकरण विश्व ग्राम की भारतीय संकल्पना का नवीन रूप है जो विश्व को एक इकाई के रूप में देखने लगता है। जब हम एक इकाई संकल्पना की बात करते हैं तो फिर सभी समस्याओं का पूरे इकाई पर प्रभाव निश्चित रूप से पड़ेगा। एक क्षेत्र दूसरे से अछूता नहीं हो सकता। वैश्वीकरण ने निश्चित रूप से विश्व में सुरक्षा के माहौल मानक व दृष्टिकोण को बदला है। आज एक देश का खतरा दूसरे देश का खतरा है और एक देश की चुनौती दूसरे देश की चुनौती थी। राजनैतिक रूप से देखें तो 1 वर्ष पूर्ण हुये चमेली क्रान्ति ने सिर्फ टूनेशिया को ही नहीं बल्कि पूरे मध्य ऐशियाई देशों में नये लोकतंत्र का उद्भव किया है वहीं वर्तमान में आतंकवाद पूरे विश्व के लिए संकट बना है। सीरिया, यमन में हो रहे आई.एस.आई.एस. के आतंकवाद या नाइजीरिया का बोको हरम ये संस्थाएं भी संयुक्त होते जा रहे हैं जहाँ ये हैं बल्कि पूरे विश्व को प्रभावित कर रहे हैं।

वैश्वीकरण में आर्थिक सन्दर्भों में सभी राष्ट्रों की अर्थव्यवस्थाओं को एक कर दिया है आज अमेरिका, यूरोप एशिया के देशों की अर्थव्यवस्थाएं एक दूसरे पर निर्भर हैं, 2008 की आर्थिक मंदी हो या ग्रीस संकट प्रभाव पूरे विश्व में हो रहे हैं। वर्तमान में चीन की आर्थिक हालात पूरे विश्व को चिन्तित कर रहे हैं। वैश्वीकरण अब सभी आर्थिक गतिविधियों को तेजी से नियंत्रित करने लगा है भौतिक सन्दर्भ में चाहे वह सीमाई विवाद हो या पारस्थितिक समस्याएं सभी के उभार में पूरा विश्व जिम्मेदार है और आज अनेको मंचों पर हो रहे प्रयास ये दिखाते हैं कि वैश्वीकरण के माध्यम से ही इसे समाप्त करने के प्रयासों को गति दी जा सकती है।

निश्चित रूप से वैश्वीकरण अपार सम्भावनाएं लेकर आता है किन्तु कुछ समस्याएं भी लाता है वैश्वीकरण इनके प्रकृति में भी परिवर्तन करता है। किन्तु यही इसके हल का मार्ग भी निकालता है। अनेकों राजनैतिक मंच जैसे संयुक्त राष्ट्र संघ, बिक्स, आशियाना इत्यादि राजनैतिक असुरक्षा से लगते हैं। वहीं डब्ल्य.टी.ओ., टी.एम.एफ. एशियन डेवलपमेंट बैंक इत्यादि आर्थिक असुरक्षा को कम करने के वैश्विक प्रयास करने का ही रूप है। आज पूरा विश्व पर्यावरणीय सीमाइ विवादों को अनेको वैश्विक मंचों से समाप्त करने में लगा है जो दिखता है कि वैश्वीकरण यदि समस्याएं लाता है वही एकता के माध्यम से इसका अन्त करने में भी सफल होता दिखता है।

मुख्य शब्द : संकल्पना, दृष्टिकोण, संस्थाएं, आर्थिक, पर्यावरणीय।

प्रस्तावना

दुनिया का प्रारम्भ घर से होता ह। व्यक्ति से परिवार, परिवार से पड़ोस, पास–पड़ोस से समाज, समाज से राष्ट्र और राष्ट्र से विश्व की ओर सबंधो का विस्तार होती है। वैश्वोकरण एक प्रवृत्तिमूलक गुण है, जिसमें एक तरफ स्थानीयता है तो वहीं दूसरी छोर पर वैश्विकता, इस रूप में यह मानवीय संगठनों, उनकी क्रियाओं को शान्ति प्रयोग, अन्तः संबंधो के अन्तर्महाद्वीपीय, अन्तर्क्षेत्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्थापना करता है जिसमें सामाजिक सम्बन्धों और संस्थाओं को समय व स्थान को एक तरफ रखकर इस प्रकार गहरा करना व फैलाना शामिल है कि एक तरफ रोज मर्रा के कार्य दुनिया के दूसरी तरफ हो रही घटनाओं से तेजी से प्रभावित हो रहे है, तो वहीं दूसरी तरफ स्थानीय समूहो और स्थानीय संचारो के द्वारा लिए गये निर्णय और प्रयोगो को प्रति ध्वनि पूरी दुनिया में गूँज रही है। वैश्वीकरण प्रक्रिया व इसके चरित्र को लेकर एक मत कायम नहीं ह। वास्तव में विद्वाना के मध्य इस बात पर अधिक विवाद है कि वैश्वोकरण का चरित्र कैसा है? गिलपिन मानते है कि वैश्वीकरण के पीछे शक्ति की राजनीति जिम्मेदार है वहीं वालस्टीन वैश्वीकरण की मूल जड़ को पूजीवाद के धरातल पर मानते है। निश्चित रूप से वैश्वीकरण एक सरल परिघटना नहीं

है। यह एक जटिल एवं सबको समाहित करने वाली विस्तृत अवधारणा है। यह एक विश्व व्यापी प्रक्रिया है, जो विश्व के विभिन्न हिस्सों में, विभिन्न अर्थो मे, विभिन्न सन्दभा के रूपों में अपने पंख फैला रही हैं। एक रेखीय प्रक्रिया न होके यह बहु आयामी परिघटना है। एक विश्व व्यापी प्रक्रिया होने के कारण इसका चरित्र द्वि आयामी है। एक तरफ से यह राजनीति, अर्थव्यवस्था व सामाजिक गतिविधियों की कड़ियों के रूप में अन्तर (क्षेत्रीय महाद्वीपीय) परिप्रेक्ष्य रखता है, तो दूसरी तरफ तो समाजों व राज्यो के मध्य व उनके अन्दर सह संबन्धों अर्न्तव्यवस्था, जुड़ाव के सघन स्तर को व्यक्त करता है।

चूँकि विषय वैश्वीकरण और असुरक्षा है जहाँ अपेक्षित है कि मैं राजनैतिक, आर्थिक व भौतिक समस्याओं पर अपना ध्यान केन्द्रित करूँ तो मैं सबसे पहले राजनैतिक समस्याआ को दखती हूँ जिसमें वैश्वोकरण को सीमा सबंधो में बढ़ोत्तरी के रूप में देखा जा सकता है। जहाँ साधारणतः इसे अन्तर्राष्ट्रीयकरण समझा जा सकता है। जिसमें राज्यों व देशों के मध्य सामानों, निवेशों, लोगो, संचारो व विचारों की आवाज ही बढ़ी है। देश एक–दूसरे से ज्यादा जुड़े है और अब ज्यादा लाभ लेने का प्रयास करते दिखाई देते हैं। पूरब और पश्चिम के बीच एक बार फिर तनाव बढ़ने लगा है। लगातार वैश्विक वित्तीय संकट के कारण अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों पर दबाव बढ़ रहा है और बहुपक्षीय संगठनों को घुटन महसूस हो रही है। वैश्वीकरण और लोकतन्त्र को लेकर 1990 में जो उत्साह पैदा हुआ था वह अब क्षीण हो चुका है। बेरोजगारी, असमानता और धार्मिक टकराव बढ़े है जो नकारात्मकता को बढ़ाता है। अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय अफगानिस्तान, इराक, लीबिया, क्रोमिया, यूक्रन, सुडान, सीरिया जैसे अनेक राष्ट्रो में स्थायित्व लाने में असमर्थ रहा है।

शीत युद्ध समाप्ति से जब तक माना जाता है कि विश्व 80 स्थलो पर 120 से ज्यादा सशस्त्र संघषा का गवाह बना है जिनमें 42 युद्ध के स्तर पर पहुचें है इनमें अधिकांश अन्तर्देशीय युद्ध नहीं थे ये नागरिक युद्ध या संबंधित देशों के प्रति द्वन्दी समूहों या राजनैतिक सम्हों के युद्ध एवं अंतः राजकीय संघर्षो के परिणित थे चूंकि हम वैश्वीकृत है ये सभी संघर्ष हमें प्रभावित करते है। टूनेशिया से जन्मी चमेली क्रान्ति जहाँ वैश्विक आधार पर फैली और लोकतन्त्र की मांग के बढ़ाया वहीं वर्तमान में ईरान, इराक, अफगानिस्तान, सीरिया इत्यादि के संघर्ष वैश्विक आधार पर तेल स्त्रोतो के अधिपत्य से भी जुड़े है। अफगानिस्तान जहाँ तालिबान के जन्म का गर्भ शीतयुद्ध काल में हथियारों की बिक्रो को बढ़ाने की अमेरिकी भूख में छिपा है। वहीं तालिबानी आतंकवादियों ने जिन्होंने अमेरिकी समर्थित अफगान सरकार का हटाने में 13 वर्षो तक युद्ध किया था ने पुनः अपने स्प्रिंग हमले प्रारम्भ कर दिये है। जिसे इन्होने अज्म (संकल्प) नाम दिया है। चीन जिसने शायद ही अफगानिस्तान की सहायता की हो आज अफगान के प्राकृतिक स्त्रोतो को पाने की होड़ में सबसे आगे दिखता है।

चीन जो अपनी वन बेल्ट, वन रूट, योजना, सिल्क रोड नीति व मोतियों की माला योजनाओं से सभी रूपों में भारत के सामरिक व राजनैतिक स्तम्भों को गिराना चाहता है वहीं भारत से सबसे अधिक व्यापार भी करता दिखता है। पाकिस्तान जो विगत 60 वषा से भारत विरोध की नीतियों पर है चीन के हर दुःसाहस में सहयोगी है। पूर्वी चीन सागर में चीन के काया का वैश्विक स्तर पर व्यापक विरोध की अब अनेको राष्ट्रो ने चीन की इस सागर में उपस्थिति कि स्वीकार्यता, चीनी नेतृत्व की भूमिका को महत्व देते है। वहीं अमेरिकी श्रेष्ठता को तोड़ता भी है जो भारत को आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक रूप से अत्यधिक प्रभावित करते है।

वैश्वीकरण सदैव से ही आर्थिक उदारीकरण, खुली व्यापारिक सीमाओं, बाजारों के एकीकरण इत्यादि अनेकों अवधारणाओं का योग रहा है। वैश्वीकरण ने वर्तमान में बाजारों के पूरे रूप रेखा को बदल दिया ह। इसने अनगिनत विनिमयों बाधाओं को हटा दिया है। आज अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, लेन–देन, वित्तीय काया, पर्यटन, संचार, तकनीक इत्यादि सभी नई सरंचनाए वैश्विक परिदृश्य में बढ़ रहें है। आज बाजार के नियम ही पूरे विश्व के बाजारों को संचालित कर रहा है। कोई भी देश अपनी अर्थव्यवस्था को वैश्वीकृत होने से रोक नहीं सकता और यदि रोक रहा है। तो उसका विकास बुरी तरह से प्रभावित होता दिखता है। आज हमारी अर्थव्यवस्था काफी हद तक वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं से जुड़ चुकी है। हम विश्व के वृहद बाजारों में से एक, हमारी उपभोग क्षमता अत्यधिक है। इसी कारण किसी भी प्रकार की आर्थिक समस्या हमें अत्यधिक प्रभावित करती है जो साधारणतः हमारे मुद्रा बाजारों में प्रतिदिन स्पष्ट होते है। पूरे विश्व में सर्वाधिक कुपोषण भारत में है। वैश्विक स्तर पर आज सांस्कृतिक दबाव एक बड़ी चुनौती है। एक संस्कृति दूसरी संस्कृति पर हावी होने का प्रयास करती दिख रही है। सांस्कृतियो का जो मेल वैश्वीकरण ने किया है। उसी ने यह सांस्कृतिक दबाव पैदा किया है। अपने सांस्कृतिक मूल्यों को बचाने के लिए धार्मिक कट्टरपंथीं अनेको प्रकार के संघर्ष वैश्विक स्तर पर पैदा कर रहें है भारत सहित पश्चिमी एशिया इसका स्पष्ट उदाहरण है।

वैश्वोकरण ने पर्यटन व मानवाधिकार के जो असीम क्षेत्रों को खोला है वही आज इनके दुरूप्रयोग आज अनेकों स्थान पर मानवाधिकार नेपथ्य (परदा) में दिखता है। खासकर संघर्ष क्षेत्रों में पर्यटन आज आर्थिक व सांस्कृतिक मेल के साथ इबोला, एड्स, स्वाईनफ्लू जैसे रोगो को बढ़ाने का मुख्य माध्यम भी बन रहा है। आज वैश्विक आधार पर रोगों का विकास हो रहा है। वैश्विक समस्याएं पूरे विश्व को प्रभावित कर रही है। चाहे उनका रूप कुछ भो क्यो न हो? निश्चित रूप से भूमण्डलीकरण ने असंतुलन को बढ़ाया है। जहाँ वृद्धि का लाभ नही पहुँचा वहा पहुचने के बजाय पुनः वही पहुँच रहा है जहाँ पहले से ही पर्याप्त समृद्धि है। आज विकसित देश और विकासशील देश लगातार विका की ओर उन्मुख है। वैश्वोकरण ने विश्व को द्वि ध्रुवीय से बदल दिया है। आज चोन भारत जापान यूरोपीयन संघ, रूस और अमेरिका मख्यतः 6 शक्ति केन्द्रो का शक्ति सन्तुलन है। निश्चित ही यह एक अलग विश्व है या नवीन वैश्विक व्यवस्था है जिसका सम्पूर्ण विश्व पूर्व में कभी आदी नही रहा है। वस्तुतः विचार धारा और महाशक्तिया की मौजूदी अब प्रासगिक नही है। वर्तमान अर्थव्यवस्था और शासन प्रणाली तनाव के मुख्य बिन्दु है। जिसमें सुशासन अपत्यक्ष रूप से

शामिल है क्योंकि अंतिम ध्येय वही है। वैश्वीकरण ने एक संक्रमण अवस्था अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था में पैदा की है जिसका परीक्षण किया जाना जरूरी है। अपने विचारों के अन्त में चार बिन्दुओं पर जोर देना चाहूँगी –

प्रथम – राज्य–राष्ट्र व्यवस्था जो सैकड़ों वर्षो से अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था का आधार रही है, अब खिसक रही है अथवा उस पर गंभीर खतरा मंडरा रहा है। राष्ट्र की सम्प्रभुता की संकल्पना अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य में धीरे–धीरे लुप्त हो रही है। पूर्व में जो व्यवस्थाएं एक इकाई, एक राज्य के रूप में थें वह अपनी स्वायत्ता खो रहे है तथा सभी देश घरेलू व विदेशी नीतिया के निर्धारण क मामले में गंभीर रूप से भारी अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिरोधों और वैश्विक दबाव का सामना कर रहे है। उत्तर औद्योगिकवाद व उत्तर आधुनिकतावाद ने इस युग मे न केवल राज्य बल्कि पूरा अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय अपने आप को सक्रमण की महान स्थिति में पा रहा है। आज सामान्य नागरिक भी अपने आप को एक राष्ट्र, अर्थव्यवस्था, राजनीति में नही रोक पा रहें है। बल्कि वे भी इन सीमाओं से ऊपर उठकर सास्कृतिक व मनोवैज्ञानिक रूप से तालमेल कर रहे है।

द्वितीय–अर्न्तराष्ट्रीय व्यवस्था में सक्रमण की इस अवस्था ने समस्त राष्ट्रा के मध्य असुरक्षा की भावना को बढ़ा दिया है। क्योंकि इस समय अस्थिरता व अनिश्चिता में वृद्धि हुई है। सोवियत रूस का विघटन मात्र नक्शे से एक राष्ट्र का मिट जाना नही था वरन् महाशक्ति का तरलीकरण था, जिसके दूरगामी और वृहद परिणाम प्राप्त हुए जो भविष्य में भी प्राप्त होते रहेंगें। अमेरिका का ईराक फिर अफगानिस्तान में हमला हों उत्तर कोरिया पर नाभिकीय प्रसार रोकने का वैश्विक दबाव या लीबिया, क्यूबा, यूक्रन या सीरिया का मामला सभी में स्पष्ट है कि राजनैतिक, आर्थिक व सांस्कृतिक संकट वैश्वीकरण के नाते बढ़े है।

तृतीय – एक नवीन प्रवृत्ति 'हस्तक्षेप की प्रवृत्ति' का उभार है, चाहे आत्मरक्षा के सन्दर्भ के सन्दर्भ हो, मानवाधिकार, नाभकीय प्रसार, जनसंचार, हथियार संग्रह, बौद्धिक संपदा हनन इत्यादि से जुड़े मुद्दे हो या फिर नए विचार जैसे– उदारीकरण निजीकरण, बाजारीकरण, वैश्वीकरण आदि ने तथा कथित एल0पी0जी0 प्रारूप में हों। शक्तिशाली राष्ट्र शक्तिहीन राष्ट्र को अपने हितो के अनुरूप ढालने का प्रयास करता हुआ दिखाई देता है। यह हस्तक्षेप बहुआयामी व बहुपक्षीय है जिनका विस्तार पूरे विश्व में है।

चतुर्थ– बात अर्थव्यवस्था और बाजार के नाम में हो रहे समझौते व बन रहे व्यापारिक मंच अपने मुख्य उद्देश्य के अनुसार नीतियों का निर्धारण कर रहा है। जी–8 हो, यूरोपीय यूनियन, डब्ल्यू0टी0ओ0 या आई0एम0एफ0, सहित वल्ड बैंक सभी ने विकसित व मुख्य साझेदारों के लिए नीतियों का नियमन किया फिर भल ही ग्रीस संकट जैसी परिस्थितिया क्यां न बनें। वैश्वीकरण ने बाजारीकरण को मानवीय मूल्यों से ऊपर उठा दिया है। आज वैश्वोकरण, उदारीकरण, भुगतान संतुलन, अनुदान, सहायता, निजीकरण, औद्योगीकरण अनेको उपकरणों का सामना अनेकों देश अपने विपक्ष में भी कर रहे है किन्तु इनसे मुक्ति सम्भव भी नही है।

ऊपर बताय गये सभी बदलाव और प्रवृत्तिया वैश्वीकरण की प्रक्रिया और उसके प्रभाव–दुष्प्रभाव की ओर संकेत भर है। यदि 20 वीं सदी को आधुनिकता की सदी और अन्तिम दशक को उत्तर आधुनिकता की सदी कहा जाता है तो 21 वीं सदी वैश्वीकरण की सदी है और आने वाले दशक संभवतः उत्तर वैश्वीकरण की सदी होंगा। निश्चित रूप से वैश्वीकरण ने अनेको संकट व चुनौतिया को जन्म दिया है किन्तु उन सबका हल भी उसी के गर्भ में है। जरूरत बस उसे समझने की है और फिर वो दिन दूर नही जब वैश्वीकरण पूरे विश्व को सच में वैश्विक ग्राम बना देगा एक अभूतपूर्व सफल व समृद्ध, सुखी वैश्विक ग्राम वैश्विक शासन को नए क्षितिजों की ओर ले जा रहे ह।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पन्ना रामचन्द्र–भारत में लोक प्रशासन।
2. दत्त वी0वी0– स्वतन्त्र भारत की विदेश नीति।
3. शर्मा सुभाष –भारत में मानवाधिकार।
4. राय बी0एन0 –वैश्वीकरण और भारत।
5. रंगराजन चक्रवर्ती–भारत की अर्थनीति के नए आयाम।
6. दीक्षित जे0एन0–भारत की विदेश नीति।
7. हिन्दू– योजना अनेकों अंक।
8. योजना मासिक के अंक।
9. सिविल सर्विसेज क्रानिकल सित0अक्टू0 2015।
10. भारत की आर्थिक समीक्षा 2014–15।